बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर शिक्षण माध्यम, वर्ग, जेंडर एवं पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन

महेन्द्र पाटीदार*
जितेन्द्र कुमार पाटीदार**

भाषा का ज्ञान संज्ञानात्मक वृद्धि, सामाजिक सहिष्णुता, विस्तृत चिंतन और बौद्धिक उपलब्धियों के स्तर को बढ़ा देता है। भाषा एक ऐसा संसाधन है जो विद्यार्थियों की रचनाशीलता को बढ़ाता है। शिक्षक शिक्षा में शिक्षाशास्त्र के अंतर्गत प्रशिक्षणार्थियों को हिंदी भाषा के विभिन्न कौशलों (लेखन, पठन, वाचन आदि) का विकास किया जाता है। लेखन कौशल में स्थाईत्व विकसित करने तथा लेखन में एकरूपता लाने के लिए वर्तनी का ज्ञान होना अति आवश्यक है। शोधार्थी द्वारा इसी आवश्यकता को महसूस करते हुए बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर शिक्षण माध्यम, वर्ग, जेंडर एवं पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन किया गया। न्यादर्श के रूप में शिक्षा अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) के 131 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों को उद्देश्यपरक न्यादर्श विधि द्वारा चयनित किया गया था। शोध उपलब्धियों में पाया गया कि बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर वर्ग के माध्य फलांकों तथा वर्तनीगत

* *यू.जी.सी., जे.आर.एफ़.*, शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर
** *सहायक प्राध्यापक*, डी.टी.ई., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

शुद्धता पर पृष्ठभूमि के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर पाया गया। जबकि बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर शिक्षण माध्यम के माध्य फलांकों, वर्तनीगत शुद्धता पर शिक्षण माध्यम, वर्ग एवं इनकी अंतर्क्रिया के माध्य फंलाकों (वर्तनीगत शुद्धता पर जेंडर के माध्य फलांकों तथा हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर जेंडर, पृष्ठभूमि एवं इनकी अंत:क्रिया के माध्य फलांकों) में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए वह अपने भावों या विचारों का आदान-प्रदान भाषा के माध्यम से करता है। प्राय: यह माना जाता है कि किसी भी व्यक्ति को शुद्ध भाषा का ज्ञान होना चाहिए। आज हिंदी का स्वागत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहा है। नेपाल, मॉरीशस, सुरीनाम, कनाडा एवं इग्लैंड आदि देशों में हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ रहा है। यहाँ तक की ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में भी हिंदी के बहुप्रचलित शब्दों का स्थान बढ़ता चला जा रहा है। विश्व का प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषा का ही उपयोग करता है। अत: भाषा को शुद्ध रूप देने के लिए वर्तनीगत नियमों का पालन होना चाहिए। परंतु वर्तनीगत लेखन के समय प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कई प्रकार की अशुद्धियाँ की जाती हैं।

भाषा के दो रूप हैं– उच्चारण भाषा का मूल रूप है तथा लेखन आश्रित रूप है। बोलकर संदेश केवल उन्हीं लोगों को दिया जा सकता है, जो कि हमारे पास होते हैं। बोलकर दिया गया संदेश क्षणिक ही होता है, क्योंकि यह अस्थाई होता है, जबकि लिखकर कही गई बात स्थाई बन जाती है। लिखित रूप को स्थाई रूप देने के लिए यह आवश्यक है कि लेखन व्यवस्था में एकरूपता रहे। लेकिन यह देखा गया है कि विभिन्न व्यक्तियों को वर्तनी का ज्ञान न होने के कारण कई प्रकार की अशुद्धियाँ जैसे – ई और इ की अशुद्धियाँ, उ और ऊ की अशुद्धियाँ, रेफ की अशुद्धियाँ, ण और न की अशुद्धियाँ, छ और क्ष की अशुद्धियाँ, ब और व की अशुद्धियाँ, श, ष और स की अशुद्धियाँ, वर्ण की अशुद्धियाँ, प्रत्यय की अशुद्धियाँ, जेंडर की अशुद्धियाँ, हलन्त की अशुद्धियाँ, चन्द्र बिन्दु और अनुस्वार की अशुद्धियाँ मुख्य हैं।

प्रत्येक भाषा में वर्तनी की एकरूपता आवश्यक है, क्योंकि विविधता सदैव भ्रम को जन्म देती है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को वर्तनी संबंधित नियमों का ज्ञान होना चाहिए। बी. एड. के प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न विद्यालयों में अपना अभ्यास कार्य करने जाते हैं। उस समय उनके शिक्षण के अवलोकन के लिए महाविद्यालय से पर्यवेक्षक

जाते हैं। वे यह अवलोकन करते हैं कि ये प्रशिक्षणार्थी अपने लेखन में कई प्रकार की अशुद्धियाँ करते हैं। यदि कोई अध्यापक ही अपने लेखन में अशुद्धियाँ करेगा तो विद्यार्थी भी निश्चित अशुद्धियाँ करेंगे क्योंकि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी किशोरावस्था के होने के कारण अध्यापक को अपना आदर्श मानते हैं।

शोधार्थी द्वारा यह आवश्यकता महसूस की गयी कि जेंडर वार पुरुष एवं महिला, शिक्षण माध्यम वार हिंदी एवं अंग्रेज़ी, पृष्ठभूमि वार शहरी एवं ग्रामीण तथा वर्ग वार सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति में से कौन बी. एड. प्रशिक्षणार्थी ज़्यादा अशुद्धियाँ करते हैं? इस विषय पर शोध की नितान्त आवश्यकता को देखते हुए तथा अभी तक इस दिशा में शोध न होने के कारण शोधार्थी द्वारा ''बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर शिक्षण माध्यम, वर्ग, जेंडर एवं पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन'' पर शोध के लिए चयनित किया गया।

उद्देश्य

1. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण माध्यम, वर्ग एवं इनमें अंतर्क्रिया का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर माध्य फलांकों का अध्ययन करना, जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया हो।
2. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के जेंडर, पृष्ठभूमि एवं इनमें अंतर्क्रिया का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर माध्य फलांकों का अध्ययन करना, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया हो।

परिकल्पना

1 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण माध्यम, वर्ग एवं इनमें अंतर्क्रिया का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया हो।
2. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के जेंडर, पृष्ठभूमि एवं इनमें अंतर्क्रिया का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया हो।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए, जनसंख्या के रूप में मध्य प्रदेश के इन्दौर शहर के बी. एड. प्रशिक्षणार्थी थे। इस जनसंख्या में से न्यादर्श के रूप में हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता के अध्ययन हेतु शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, (म.प्र.) के सत्र 2010–11 के 131 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों को उद्देश्यपरक न्यादर्श विधि द्वारा चयनित किया गया था। शोध के लिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों माध्यम के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया था। जिनकी उम्र 21 वर्ष से 38 वर्ष के मध्य थी। ये प्रशिक्षणार्थी पुरुष एवं महिला दोनों थे। इन बी. एड.

प्रशिक्षणार्थियों की पृष्ठभूमि शहरी एवं ग्रामीण थी। इनमें सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी. एड. प्रशिक्षणार्थी थे।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की वर्तनीगत शुद्धता के अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा वर्तनीगत शुद्धता परीक्षण का निर्माण किया गया था। जिसमें वर्तनीगत शुद्धता से संबंधित 40 बहु-वैकल्पिक प्रश्न थे। इसमें ण और न की अशुद्धियाँ, छ और क्ष की अशुद्धियाँ, ब और व की अशुद्धियाँ, श, ष और स की अशुद्धियाँ, वर्ण की अशुद्धियाँ, प्रत्यय की अशुद्धियाँ, जेंडर की अशुद्धियाँ जैसे-गया व गयी, खाया व खायी की अशुद्धियाँ, हलन्त की अशुद्धियाँ, चन्द्र बिन्दु और अनुस्वार की अशुद्धियाँ आदि से संबंधित प्रश्नों का निर्माण किया गया था।

प्रदत्त संकलन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए, प्रदत्त संकलन उद्देश्यपरक न्यादर्श विधि से चयनित न्यादर्श से किया गया। शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के विभागाध्यक्ष से शोध कार्य हेतु अनुमति ली गई। तत्पश्चात् शोधक द्वारा न्यादर्श में चयनित बी. एड. प्रक्षिणार्थियों को शोध का उद्देश्य बताया गया तथा उन्हें वर्तनीगत शुद्धता परीक्षण संबंधी निर्देश देते हुए वर्तनीगत शुद्धता परीक्षण हल करने हेतु दिया गया। अन्त में, सभी प्रशिक्षणार्थियों से उत्तर पत्रक प्राप्त कर मानक उत्तर तालिका से मिलान कर अंक प्रदान किए गए। इस प्रकार, प्रदत संकलन कर उपयुक्त सांख्यिकी तकनीकी की सहायता से प्रदतों का विश्लेषण किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्न सांख्यकीय तकनीक का उपयोग किया गया था-

1. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण माध्यम, वर्ग एवं इनमें अंतर्क्रिया का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया हो के लिए द्विमार्गीय सहप्रसरण विश्लेषण (ANCOVA) का उपयोग किया गया।
2. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के जेंडर, पृष्ठभूमि एवं इनमें अंतर्क्रिया का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया हो, के लिए द्विमार्गीय सहप्रसरण विश्लेषण (ANCOVA) का उपयोग किया गया।

परिणाम तथा विवेचना

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों के अनुसार प्रदत्त विश्लेषण, प्राप्त परिणाम एवं उनकी विवेचना निम्न प्रकार की गई है-

प्रस्तुत शोध का पहला उद्देश्य था- बी. एड.

प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण माध्यम, वर्ग एवं इनकी अंतर्क्रिया का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर माध्य फलांकों का अध्ययन करना जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया हो। यहाँ स्वतंत्र चर शिक्षण माध्यम एवं वर्ग है, शिक्षण माध्यम के दो स्तर हिंदी एवं अंग्रेज़ी है तथा वर्ग के चार स्तर सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति हैं। आश्रित चर वर्तनीगत शुद्धता है तथा पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक के रूप में लिया गया है। इस उद्देश्य से संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण द्विमार्गीय सहप्रसरण विश्लेषण (ANCOVA) द्वारा किया गया। प्रदत्त विश्लेषण से प्राप्त परिणामों को तालिका 1 में प्रदर्शित किया गया है–

विवेचना

तालिका 1 से ज्ञात होता है कि शिक्षण माध्यम के लिए समायोजित 'F' का मान .265 जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, जबकि df = 1/121 है। अर्थात् हिंदी एवं अंग्रेज़ी के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक के रूप में लिया गया है। अत: इस स्थिति में शून्य परिकल्पना बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर शिक्षण माध्यम का कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया हो, निरस्त नहीं की जाती है। अत: निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता शिक्षण माध्यम से स्वतंत्र पायी गयी, जबकि

तालिका 1
हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता के संदर्भ में द्विमार्गीय सहप्रसरण विश्लेषण के 2 × 4 कारकीय अभिकल्प का सारांश

विचरण के स्रोत	*df*	*SSyx*	*MSSyx*	*Fyx*
शिक्षण माध्यम	1	6.026	6.026	.265
वर्ग	3	221.173	73.724	3.248**
शिक्षण माध्यम × वर्ग	3	70.721	23.574	1.039
त्रुटि	121	2746.565	22.699	
योग	**128**	**98463**		

**0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया था। इसके संभावित कारण यह हो सकते हैं कि जब प्रशिक्षणार्थी विद्यालय स्तर पर अध्ययन कि प्रक्रिया से गुजरे होंगे तब हिंदी एवं अंग्रेज़ी मध्यम के प्रशिक्षणार्थियों की हिंदी में वर्तनीगत शुद्धता पर बराबर रूप से ध्यान दिया गया होगा। दोनों माध्यम में प्रशिक्षणार्थियों को वर्तनीगत नियमों का प्रशिक्षण भली-भांति दिया होगा। इन्हें यह भी बताया गया होगा कि वर्तनीगत अशुद्धता से विविधता की स्थिति उत्पन्न होती है। साथ-ही-साथ इन दोनों समूह के प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्तर भी लगभग एक जैसे ही होंगे। इस कारण शिक्षण माध्यम का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया था।

तालिका 1 से ज्ञात होता है कि वर्ग के लिए समायोजित 'F' का मान 3.248 जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जबकि df=k 3/121 है। अर्थात् सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर है। जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक के रूप में लिया गया है। अत: इस स्थिति में शून्य परिकल्पना कि बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर वर्ग के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया हो, निरस्त की जाती है। अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता वर्ग से प्रभावी पायी गयी, जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया था। इसके संभावित कारण यह हो सकते हैं कि सभी वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर है। वर्तनीगत शुद्धता पर सामान्य वर्ग का समायोजित माध्य फलांक 29, अन्य पिछड़ा वर्ग का समायोजित माध्य फलांक 27.25, अनुसूचित जाति का समायोजित माध्य फलांक 27 तथा अनुसूचित जनजाति का समायोजित माध्य फलांक 22.92 है। यहाँ स्पष्ट है कि सामान्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की अन्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में वर्तनीगत शुद्धता ज़्यादा अच्छी है। सामान्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की वर्तनीगत शुद्धता अच्छी होने का एक कारण यह भी हो सकता है कि इन प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान अन्य प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में ज़्यादा सुविधाएँ मिली हों। अर्थात् इनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति अन्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में ज़्यादा अच्छी होगी। साथ-ही-साथ इन चारों समूहों के प्रशिक्षणार्थियों ने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर एक समान ध्यान नहीं दिया होगा। इस कारण वर्ग का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर सार्थक अंतर पाया गया, जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया था।

तालिका 1 से ज्ञात होता है कि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग की अंतर्क्रिया के लिए समायोजित 'F' का मान 1.039 जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, जबकि df = 1/121 है। अर्थात् हिंदी और अंग्रेज़ी माध्यम तथा वर्ग (सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति) एवं इनकी अंतर्क्रिया का बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक के रूप में लिया गया है। अत: इस स्थिति में शून्य परिकल्पना कि बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर शिक्षण माध्यम एवं वर्ग की अंतर्क्रिया के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया हो, निरस्त नहीं की जाती है। अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता हिंदी और अंग्रेज़ी माध्यम तथा वर्ग (सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति) एवं इनकी अंतर्क्रिया से स्वतंत्र पायी गयी, जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया था। इसके संभावित कारण यह हो सकते हैं कि हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के प्रशिक्षणार्थी हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर बराबर जागरूक होते होंगे। यहाँ यह स्पष्ट है कि माध्यम वर्ग को प्रभावित नहीं करता है। साथ-ही-साथ यह भी कहा जा सकता है कि प्रशिक्षणार्थी हिंदी का हो या अंग्रेज़ी का या फिर किसी भी वर्ग का हो इनका आपस में एक-दूसरे पर प्रभाव नहीं पड़ता है। इस कारण शिक्षण माध्यम एवं वर्ग की अंतर्क्रिया का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया था।

प्रस्तुत शोध का दूसरा उद्देश्य था- बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के जेंडर, पृष्ठभूमि एवं इनकी अंतर्क्रिया का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर माध्य फलांकों का अध्ययन करना जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया हो। यहाँ स्वतंत्र चर जेंडर एवं पृष्ठभूमि है, जेंडर के दो स्तर पुरुष एवं महिला हैं तथा पृष्ठभूमि के भी दो स्तर– शहरी एवं ग्रामीण हैं। आश्रित चर वर्तनीगत शुद्धता है तथा शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक के रूप में लिया गया है। इस उद्देश्य से संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण द्विमार्गीय सहप्रसरण विश्लेषण (ANCOVA) द्वारा किया गया। प्रदत्त विश्लेषण से प्राप्त परिणामों को तालिका 2 में प्रदर्शित किया गया है -

तालिका 2
हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता के संदर्भ में द्विमार्गीय सहप्रसरण विश्लेषण के 2 × 2 कारकीय अभिकल्प का सारांश

विचरण के स्रोत	*df*	*SSyx*	*MSSyx*	*Fyx*
जेंडर	1	11.267	11.267	.499
पृष्ठभूमि	1	156.001	156.001	6.908*
जेंडर × पृष्ठभूमि	1	23.661	23.661	1.048
त्रुटि	125	2816.763	22.901	
योग	**128**	**98463**		

**0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

विवेचना

तालिका 2 से ज्ञात होता है कि जेंडर के लिए समायोजित 'F' का मान .499 जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, जबकि df = 1/125 है। अर्थात् पुरुष एवं महिला बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है। जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक के रूप में लिया गया है। अत: इस स्थिति में शून्य परिकल्पना कि बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर जेंडर के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया हो, निरस्त नहीं की जाती है। अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता जेंडर से स्वतंत्र पायी गयी, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया था। इसके संभावित कारण यह हो सकते हैं कि पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थी हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर अपना सम्पूर्ण ध्यान देते होंगे। वर्तनीगत शुद्धता में जितने ही पुरुष सचेत रहते हैं, उतनी ही महिलाएं भी सचेत रहती हैं। इस कारण जेंडर का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया था।

तालिका 2 से ज्ञात होता है कि पृष्ठभूमि के लिए समायोजित 'F' का मान 6.908 जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जबकि df = 1/125 है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर है। जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक के रूप में लिया गया है। अत: इस स्थिति में शून्य परिकल्पना बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी

लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर पृष्ठभूमि के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर है जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया हो, निरस्त की जाती है। अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता सकता है कि हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पृष्ठभूमि से प्रभावी पायी गयी, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया था। इसके संभावित कारण यह हो सकते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी प्रशिक्षणार्थी हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर बराबर रूप से ध्यान नहीं देते होगें। शहरी पृष्ठभूमि के प्रशिक्षणार्थियों का समायोजित माध्य फलांक 28.39 है जो कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के प्रशिक्षणार्थियों के समायोजित माध्य फलांक 24.50 से सार्थक रूप से उच्च है। अत: ग्रामीण पृष्ठभूमि के प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान सम्पूर्ण सुविधाएँ नहीं मिली होंगी। साथ ही साथ वे अपने पैतृक कार्य में सहयोग देने के कारण अध्ययन पर सम्पूर्ण ध्यान नहीं दे पाते होंगे। इस कारण पृष्ठभूमि का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर सार्थक अंतर पाया गया, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया था।

तालिका 1.2 से ज्ञात होता है कि जेंडर एवं पृष्ठभूमि की अंतर्क्रिया के लिए समायोजित 'F' का मान 1.048 जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, जबकि df = 1/125 है। अर्थात् पुरुष एवं महिला तथा ग्रामीण एवं शहरी तथा इनकी अंतर्क्रिया का बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक के रूप में लिया गया है। अत: इस स्थिति में शून्य परिकल्पना कि बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर जेंडर एवं पृष्ठभूमि की अंतर्क्रिया के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया हो, निरस्त नहीं की जाती है। अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पुरुष और महिला तथा ग्रामीण और शहरी प्रशिक्षणाथियों एवं इनकी अंतर्क्रिया से स्वतंत्र पायी गयी, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया था। इसके संभावित कारण यह हो सकते हैं कि पुरुष एवं महिला तथा ग्रामीण एवं शहरी प्रशिक्षणार्थी हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर समान ध्यान देते होंगे। इस संदर्भ में यह भी कहा जा सकता है कि पुरुष ग्रामीण हो या शहरी इसका वर्तनीगत शुद्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसी प्रकार महिला भी ग्रामीण हो या शहरी इसका वर्तनीगत शुद्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इस कारण जेंडर एवं पृष्ठभूमि की अंतर्क्रिया का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया था।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष थे –

1. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर शिक्षण माध्यम के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया हो।
2. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर वर्ग के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर पाया गया, जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया हो।
3. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर शिक्षण माध्यम, वर्ग एवं इनकी अंतर्क्रिया के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि पृष्ठभूमि एवं जेंडर को सहप्रसरक माना गया हो।
4. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर जेंडर के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया हो।
5. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर पृष्ठभूमि के माध्य फंलाकों में सार्थक अंतर पाया गया, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया हो।
6. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर जेंडर, पृष्ठभूमि एवं इनकी अंतर्क्रिया के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि शिक्षण माध्यम एवं वर्ग को सहप्रसरक माना गया हो।

शैक्षिक निहितार्थ

- प्रस्तुत शोध से शिक्षकों का हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता पर ध्यान केंद्रित हो सकेगा। जिससे वे स्वयं अपनी वर्तनी में शुद्धता लाएंगे। साथ ही, विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि एवं वर्ग को ध्यान में रखते हुए हिंदी लेखन में शुद्धता पर ध्यान दे सकेंगे।
- प्रस्तुत शोध पाठ्यपुस्तक लेखकों को हिंदी माध्यम में पाठ्यपुस्तकें लिखने में वर्तनीगत शुद्धता हेतु दिशा-निर्देश प्रदान करने में सहायक हो सकता है।
- प्रस्तुत शोध पाठ्यचर्या निर्माताओं को हिंदी में वर्तनीगत शुद्धता से संबंधित विषय-वस्तु को सम्मिलित करने में सहायता प्राप्त होगी।
- प्रस्तुत शोध से विद्यार्थियों की हिंदी लेखन में वर्तनीगत शुद्धता का विकास हो सकेगा।

संदर्भ

गौर, ए. एवं एस. गौर. 2006. *शोध एवं प्रयोगों की सांख्यिकीय विधियाँ*, रिसपॉन्स बुक्स, नयी दिल्ली

गुप्ता, एस. पी. एवं ए. गुप्ता. 2010. *व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ*, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

नगेन्द्र एवं हरदयाल. 2010. *हिंदी साहित्य का इतिहास*, मयूर पेपरबैक्स, नौएडा

प्रसाद, वी. 2001. *आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना*, भारती भवन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना

राय, ए. 2003. *हिंदी व्याकरण एवं रचना*, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

शर्मा, जी. एवं एस. भारद्वाज. 2004. *हिंदी भाषा शिक्षण*, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा

शर्मा, आर.ए. 2010. शैक्षिक शोध, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

सिंह, ए.के. 2006. *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ*, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

सिंह, के. 2006. *हिंदी शिक्षण*, गोविन्द प्रकाशन, लखीमपुर-खीरी

सिंह, एस. 2006. *हिंदी शिक्षण*, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ